श्री आदिनाथ विधान (हिन्दी–संस्कृत)

माण्डला

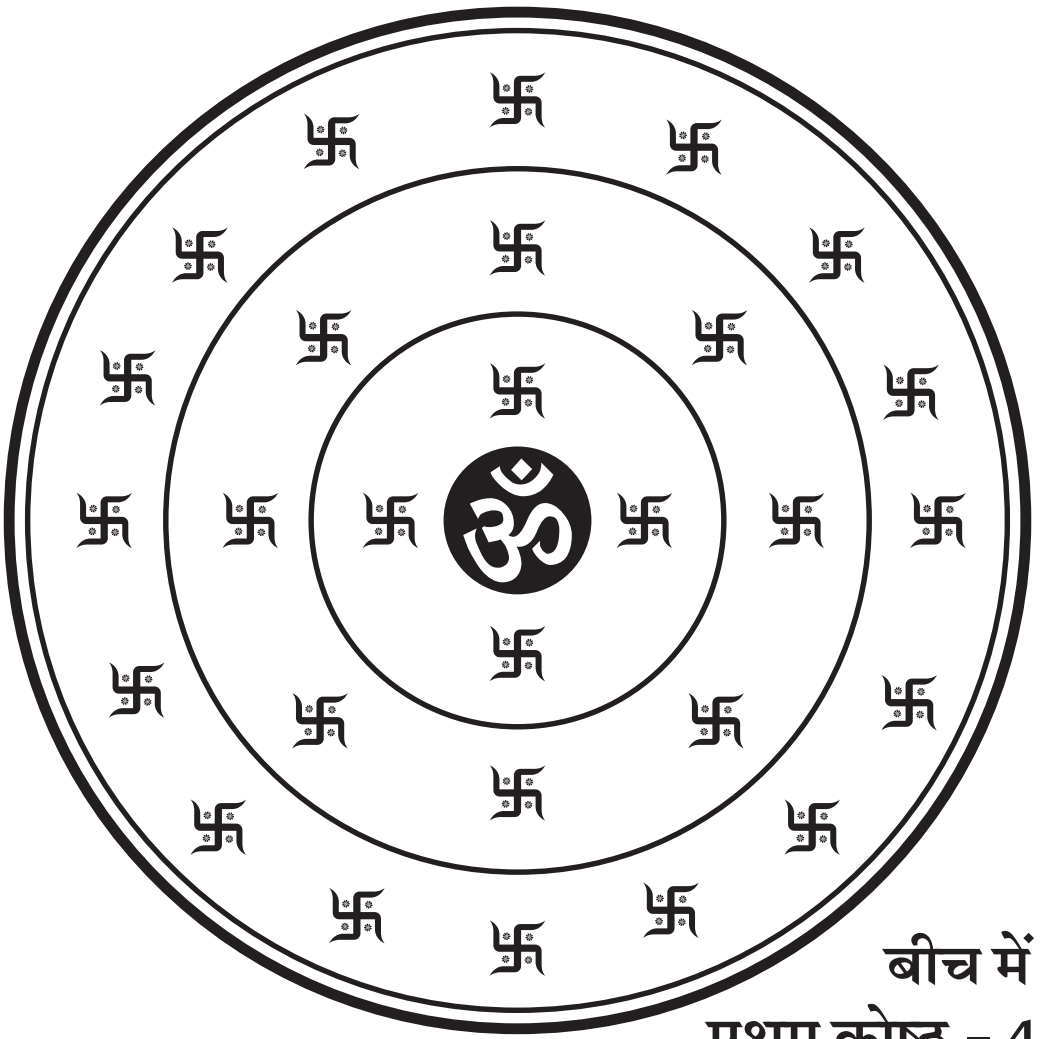

बीच में – ॐ

प्रथम कोष्ठ – 4 अर्घ्य

द्वितीय कोष्ठ – 8 अर्घ्य

तृतीय कोष्ठ – 16 अर्घ्य

कुल – 28 अर्घ्य

रचयिता :

प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

कृति : श्री आदिनाथ विधान (हिन्दी-संस्कृत)
कृतिकार : प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
संस्करण : प्रथम 2023, प्रतियाँ : 1000
संकलन : मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
सहयोगी : आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी
क्षुल्लिका श्री वात्सल्यभारती माताजी
ब्र. प्रदीप भैया - मो.: 7568840873
संपादन : ब्र. ज्योति दीदी - मो.: 9829076085
ब्र. आस्था दीदी - मो.: 9660996425
ब्र. सपना दीदी - मो.: 9829127533
संयोजन : ब्र. आरती दीदी - मो.: 8700876822
प्राप्ति स्थल : 1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, मो.: 9413336017
2. श्री महेन्द्र कुमार जैन, सैक्टर-3 रोहिणी, दिल्ली
मो.: 9810570747
3. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी 09416888879

पुण्यार्जक : **विभा जैन धर्मपत्नी स्व. श्री विनय कुमार जैन**
निशा जैन धर्मपत्नी लोकेश जैन, ऋचा जैन धर्मपत्नी विनीत जैन
शिखा जैन धर्मपत्नी पारस जैन, ईशिता जैन, पूर्वांश जैन
नहटौर, बिजनौर (उ.प्र.)

श्री आदिनाथ स्तवन (संस्कृत)

स्तवन (अनुष्टुप-छन्द)

वृषभं वृष चक्रांकम्, वृष-तीर्थ-प्रवर्तकम्।
वृषाय विशदं वंदे, वृषभं वृषभात्मानाम्।।1।।

(दोधक-छंद)

आदि जिनं वंदे गुणसदनं, सदनन्तामल-बोधं जी।
बोधकता-गुण विस्तृत कीर्तिं, कीर्तित पथ-मविरोधं जी।।
आदि जिनं...।।2।।
रोधरहित-विस्फुर-दुपयोगं, योगं दधत-मभंगं जी !
भंगं नय-वज्र-पेशलवाचं, वाचं यम-सुख-संगं जी।। आदि...।।3।।
संगत पद-शुचि वचन तरंगं, रंगं जगति ददानं जी।
दान-सुरद्रुम-मंजुल हृदयं, हृदयांगम-गुण-भानं जी।। आदि...।।4।।
आनन्दित-सुर-नर-पुन्नागं, नागर-मानस-हंसं जी।
हंस गतिं पंचम-गतिवासं, वासव-विहिता-शंसं जी।। आदि...।।5।।
शंसन्तं नयवचन-मनवमं, नव-मंगल-दातारं जी।
तार-स्वर-मघ घनपवमानं, मान सुभट-जेतारं जी।। आदि...।।6।।

(बसन्त तिलका छंद)

इत्थं स्तुतः प्रथम तीर्थं पतिः प्रमोदात्,
श्री मद - यशो सकल ज्ञायक पुंगवेन्।
श्री पुंडरीक - गिरिराज - विराजमानो,
मानोन्मुखानि वितनोतु सतां सुखानि।।7।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत ।।

श्री आदिनाथ पूजा विधान

स्थापना

आदिनाथ भगवान हैं, शिव पद के दातार।
आह्वानन् करते हृदय, पाने मुक्ती द्वार।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चौपाई छन्द)

प्रासुक यह नीर चढ़ाएँ, जल धारा कर हर्षाएँ।
हम ऋषभदेव को ध्याएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन गोशीर घिसाएँ, भवताप से मुक्ती पाएँ।
हम ऋषभदेव को ध्याएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत जिन चरण चढ़ाएँ, अक्षय पदवी हम पाएँ।
हम ऋषभदेव को ध्याएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित यह पुष्प चढ़ाएँ, हम कामरोग विनशाएँ।
हम ऋषभदेव को ध्याएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

चरु ताजे यहाँ चढ़ाएँ, अब क्षुधा से मुक्ती पाएँ।
हम ऋषभदेव को ध्याएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा को दीप जलाएँ, अब आठों कर्म नशाएँ।
हम ऋषभदेव को ध्याएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, हम मोह तिमिर विनशाएँ।
हम ऋषभदेव को ध्याएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल ताजे यहाँ चढ़ाएँ, हम मोक्ष महाफल पाएँ।
हम ऋषभदेव को ध्याएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा कर अर्घ्य चढाएँ, अब पद अनर्घ्य पा जाएँ।
हम ऋषभदेव को ध्याएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा – देते शांतीधार, भाव सहित हम भी यहाँ।
पाएँ भवदधि पार, यही भावना भा रहे।।

शान्तये शांतिधारा

सोरठा – पाने शिव सोपान, पुष्पांजलि करते चरण।
करते हम गुणगान, अतः भाव से हम यहाँ।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

पंचकल्याणक के अर्घ्य

आषाढ़ सु द्वितीया गाई, प्रभु गर्भ में आए भाई।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ कृष्ण द्वितीयां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वदि चैत नमें को स्वामी, जन्मे प्रभु अन्तर्यामी।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्ण नवम्यां जन्म कल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नौमी वदि चैत को भाई, जिनवर ने दीक्षा पाई।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्ण नवम्यां दीक्षा कल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकादशि फाल्गुन पाए, प्रभु केवल ज्ञान जगाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन वदि एकादश्यां केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वदि माघ सु चौदश आए, अष्टापद से शिव पाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं माघ कृष्ण चर्तुदश्यां मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा - ऋषभ देव से देव का, कैसे हो गुणगान।
जयमाला गाते यहाँ, करने को जयगान।।

(पद्धरि छन्द)

जय भोग भूमि का अन्त पाय, जय ऋषभदेव अवतार आय।
जय पिता आपके नाभिराय, जय माता मरुदेवी कहाय।।1।।
जय अवधपुरी नगरी प्रधान, घर-घर में छाया सुयश गान।
सौधर्म इन्द्र तब हर्ष पाय, तव न्हवन मेरु पे जा कराय।।2।।
प्रभु के पद में करके प्रणाम, तव ऋषभनाथ शुभ दिया नाम।
शुभ धनुष पाँच सौ उच्च देह, जन-जन से जिनको रहा नेह।।3।।
लख पूर्व चौरासी उम्र जान, षट्कर्म की शिक्षा दिए मान।
नीलांजना की मृत्यु का योग, पाके छोड़े संसार भोग।।4।।
तब नग्न दिगम्बर भेष धार, निज में निज ध्याये निराकार।
प्रगटाए प्रभु कैवल्य ज्ञान, प्रभु दिव्य देशना दिए जान।।5।।
फिर 'विशद' कर्म का कर विनाश, शिवपुर में जाके किए वास।
अष्टापद पाया मोक्ष थान, जो सिद्धक्षेत्र गाया महान।।6।।
महिमा का जिनकी नहीं पार, संयम धर पाए मोक्ष द्वार।
जो पूज्य हुए जग में महान, देते हैं जग को अभयदान।।7।।

दोहा - गुण गाते हैं भाव से, चरण झुकाते शीश।
अर्चा करते हम 'विशद', पाने को आशीष।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – गुण पाने गुणगान हम, करते मंगलकार।
शिवपद के राही बनें, पाएँ भवदधि पार।।

(इत्याशीर्वादः)

प्रथम वलयः

दोहा – आराधन आराध कर, किए कर्म का अंत।
वृषभदेव वृष प्राप्त कर, हुए विशद अरहंत।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

(चार आराधना के अर्घ्य)

(रेखता छन्द)

प्रभु जी पाए सम्यक् दर्श, जगाए मन में अतिशय हर्ष।
हुए प्रभु जी आराधन वान, प्राप्त फिर किए सुपद निर्वाण।।1।।

ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन आराधना युत श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राप्त करके प्रभु सम्यक् ज्ञान, जगाए अतिशय केवलज्ञान।
हुए प्रभु जी आराधन वान, प्राप्त फिर किए सुपद निर्वाण।।2।।

ॐ ह्रीं सम्यक् ज्ञान आराधना युत श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

प्रभु जी होके चारित वान, किए जो निज आतम का ध्यान।
हुए प्रभु जी आराधन वान, प्राप्त फिर किए सुपद निर्वाण।।3।।

ॐ ह्रीं सम्यक् चारित आराधना युत श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु जी हो द्वादश तपवान, निर्जरा अनुपम किए प्रधान।
हुए प्रभु जी आराधन वान, प्राप्त फिर किए सुपद निर्वाण।।4।।

ॐ ह्रीं सम्यक् तप आराधना युत श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – सम्यक् दर्शन ज्ञान शुभ, चारित सुतप महान।
चउ आराधन कर मिले, शिव पद का सोपान।।5।।

ॐ ह्रीं चउ आराधना युत श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

द्वितीय वलयः

दोहा – गुण अतिशय पाएँ प्रभू, दोष रहित भगवान।
भव्य जीव करते अतः, भाव सहित गुणगान।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

जिन गुणावली

(चौपाई)

जन्म के दश अतिशय प्रभु पाएँ, अतिशय पावन ये प्रगटाएँ।
अर्हत् पदवी को प्रभु पाते, अतः जगत में पूजे जाते।।1।।

ॐ ह्रीं दश जन्मातिशय प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ज्ञान के अतिशय दश प्रगटाएँ, पावन केवलज्ञान जगाएँ।
अर्हत् पदवी को प्रभु पाते, अतः जगत में पूजे जाते।।2।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञान दशातिशय प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदह देवों कृत कहलाएँ, अतिशय प्रभु जी ये भी पाएँ।
अर्हत् पदवी को प्रभु पाते, अतः जगत में पूजे जाते।।3।।

ॐ ह्रीं चतुर्दश देवातिशय प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

होते प्रातिहार्य के धारी, तीन लोक में मंगलकारी।
अर्हत् पदवी को प्रभु पाते, अतः जगत में पूजे जाते।।4।।

ॐ ह्रीं अष्ट प्रातिहार्य युत श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अनन्त चतुष्टय प्रभु जी पाएँ, कर्म घातियाँ आप नशाएँ।
अर्हत् पदवी को प्रभु पाते, अतः जगत में पूजे जाते।।5।।

ॐ ह्रीं अनन्त चतुष्टय युत श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोष अठारह रहित कहाए, प्रभु अतिशय महिमा दिखलाए।
अर्हत् पदवी को प्रभु पाते, अतः जगत में पूजे जाते।।6।।

ॐ ह्रीं अष्टादश दोष रहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कहे प्रभू दश धर्म के धारी, जिनकी महिमा अतिशय कारी।
अर्हत् पदवी को प्रभु पाते, अतः जगत में पूजे जाते।।7।।

ॐ ह्रीं दशधर्म धारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

द्वादश अनुप्रेक्षा जो ध्याएँ, अतिशय प्रभु वैराग्य जगाएँ।
अर्हत् पदवी को प्रभु पाते, अतः जगत में पूजे जाते।।8।।

ॐ ह्रीं द्वादश अनुप्रेक्षा भावना युत श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

प्रभु जी हैं अनुपम गुणधारी, जिनकी महिमा विस्मयकारी।
अर्हत् पदवी को प्रभु पाते, अतः जगत में पूजे जाते।।9।।

ॐ ह्रीं अनुपम गुणधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तृतिय वलयः

दोहा – गुण विशिष्ट पाएँ प्रभू, महिमामयी महान।
जिससे हो इस लोक में, जग जन का कल्याण।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

विशिष्ट गुणावली

(चाल छन्द)

प्रभु दोष रहित कहलाए, सर्वज्ञ आप्तता पाए।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं सर्व अपराध नाशन समर्थ श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

है द्वेष रहित अविकारी, है जग से महिमा न्यारी।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं समस्त उपद्रव नाशन समर्थ श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु वीतरागता धारी, निज आतम ब्रह्म विहारी।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं समस्त अनर्थकारक रागभूत विनाशन समर्थ श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मति ज्ञानाज्ञान निवारी, कैवल्य ज्ञान के धारी।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं समस्त दीनता हीनता नाशन समर्थ श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुत ज्ञानाज्ञान के त्यागी, कहलाए आप विरागी।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं समस्त अज्ञान नाशन समर्थ श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वय अवधि ज्ञान विनिवारी, जगती पति जिन शिवकारी।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं समस्त दुर्घटना नाशन समर्थ श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन पर्यय ज्ञान भी छोड़े, निज से निज नाता जोड़े।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं समस्त मनोरोग-विकार-विभ्रम नाशन समर्थ श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो हैं तत्वों के ज्ञाता, इस जग के भाग्य विधाता।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं सप्त तत्व परमोपदेशक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो पुण्य पाप परिहारी, जग-जन के रक्षाकारी।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं समस्त पराभव नाशन समर्थ श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं जीव कई संसारी, इक दूजे के उपकारी।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।10।।

ॐ ह्रीं पंचपरावर्तन संसार भ्रमण नाशन समर्थ आराध्य स्वरूप श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मुक्त जीव हो जाते, वे सिद्ध बुद्ध कहलाते।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।11।।

ॐ ह्रीं आत्म सिद्धि निरोधक कारण विनाशन समर्थ आराध्य स्वरूप श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रस थावर जीव कहाए, जग में सब भ्रमते पाए।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।12।।

ॐ ह्रीं संयोग वियोग दुख विनाशन समर्थ आराध्य स्वरूप श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो भव्य जीव कहलाएँ, वे रत्नत्रय निधि पाएँ।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।13।।

ॐ ह्रीं रत्नत्रय आराध्य स्वरूप श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

होते अभव्य जो प्राणी, बहिरातम हों अज्ञानी।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।14।।

ॐ ह्रीं निधत्ति निकाचित कर्म विनाशन समर्थ आराध्य स्वरूप श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तर आतम हों ज्ञानी, जो वीतराग विज्ञानी।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।15।।

ॐ ह्रीं कुश्रुत श्रद्धा विनाशन समर्थ आराध्य स्वरूप श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन सकल निकल द्वय गाए, परमातम विशद कहाए।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।16।।

ॐ ह्रीं कपोल कल्पित सिद्धान्त श्रद्धा विनाशन समर्थ आराध्य स्वरूप श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह गुण विशेष जिन पावें, अरहंत अतः कहलावें।
परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।17।।

ॐ ह्रीं विशिष्ट गुण धारक कष्ट निवारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य : ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः मम सर्व कार्य सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

जयमाला

दोहा - धनुष पाँच सौ उच्चतम, तन है स्वर्ण समान।
लख चौरासी पूर्व वय, ऋषभनाथ भगवान।।

(शम्भू छन्द)

पंचकल्याणक पाने वाले, तीर्थंकर हैं जगत प्रसिद्ध।
कर्म नाशकर अपने सारे, हो जाते हैं वे जिन सिद्ध।।
गर्भ कल्याणक में आने के, छह महीने पहले शुभकार।
देव रत्न वृष्टी करते हैं, जन्म नगर में मंगलकार।।1।।
अष्ट देवियाँ गर्भ का शोधन, करती आके भाव विभोर।
उत्सव होता है नगरी में, मंगलमय होता चारों ओर।।
सोलह स्वप्न देखती माता, जिनकी महिमा अपरम्पार।
जन्म समय में इन्द्र चरण में, बोला करते जय जयकार।।2।।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराने, ऐरावत ले आता इन्द्र।
एक हजार आठ कलशों से, न्हवन करायें सौ सौ इन्द्र।।

पद युवराज प्राप्त करके जिन, पाते हैं नर भव के भोग।
हो विरक्त दीक्षा पाते हैं, पा करके अनिष्ट संयोग।।3।।
केश लुंच कर महाव्रती हो, करते हैं निज आतम ध्यान।
कर्म निर्जरा करते ज्ञानी, असंख्यात गुणी जिन भगवान।।
कर्म घातियाँ के नाशी जिन, प्रगटाते हैं केवलज्ञान।
समवशरण की रचना करते, स्वर्ग से आके इन्द्र महान।।
दिव्य देशना खिरती प्रभु की, भव्य जीव करते रसपान।
कोई दर्शन ज्ञान जगाकर, चारित पा करते कल्याण।।
अन्त समय में कर्म नाशकर, करते हैं प्रभु मोक्ष प्रयाण।
मोक्ष मार्ग दर्शायक जग में, आदिनाथ जी हुए महान।।5।।

दोहा - राही बनते मोक्ष के, तीर्थंकर भगवान।
जिनसे दर्शन ज्ञान पा, करते निज कल्याण।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा -श्रद्धा से सम्यक्त्व हो, होवे सम्यक् ज्ञान।
सम्यक् चारित हो विशद, जो है शिव सोपान।।

इत्याशीर्वादः

आचार्य 108 श्री विशदसागर जी महाराज का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर ! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर ले मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु चरणों में सिर धरते हैं।।

ॐ ह्रूँ क्षमामूर्ति आचार्य 108 श्री विशदसागरजी यतिवरेभ्यो: अर्घ्यं नि.स्वाहा।

श्री आदिनाथ स्तवन

(बसंत तिलका छंद)

नाभेय राज कुल मण्डन आदिनाथः।
जातः अयोध्या पुरे मरुदेवि मातुः।।
सिद्धि प्रियाः सकल भव्य हितंकरेभ्यः।
दद्यात वृषं श्री वृषभ जिनराज सम्यक्।।1।।
कैवल्य बोध रवि दीधितिभिः समन्तात्।
दुष्कर्म पंकिल भुवं किल शोषयन यः।।
भव्यस्य चित्त जलज प्रति बोधकारी।
तं जिनेन्द्र सुर नुतं सततं स्तवीमि।।2।।
अष्टापदे विशद बर्फ युते मनोज्ञे।
योगे निरुध्य खलु कर्म वनं ह्यधाक्षीत्।।
लेभे सुमुक्ति ललना- मुपमा व्यतीताम्।
वन्दे त्वनन्त सुख धाम जिनेश तुभ्यं।।3।।
यद् वद् मया भव भवे जिन दुःख-माप्तं।
त्रैलोक्य वित् त्वमपि वेत्सि तदेव सर्वं।।
सर्वेश सम्प्रति भवान् भक्तां यदेव।
कर्तव्य - मस्ति कुरुतां मम तत्प्रमाणं।।4।।
ये त्वां नमंति हृदये दधते स्तवन्ति।
त्वच्छासनैक वचनं च वहंति मूर्ध्ना।।
तेषां सुरा अपि नतिं स्तवनं सुवाच।
कुर्वन्ति नित्यमिह का मनुजस्य वार्ता।।5।।
अकृतानि कृतानीह, जिन बिम्बानि सर्वतः।
स्वात्म सौख्य प्रदानि स्यु कुर्युश्च मम मंगलम्।।

श्री आदिनाथ पूजन

स्थापना

इक्ष्वाकु वंश कुल नन्दन नाभिरायं।
तद् वल्लभः पतिव्रता मरुदेवि राज्ञी।।
तस्यानजं विमल मूर्ति सुरेन्द्र वंद्यं।
त्रैलोक्यनाथ ! जिनराज पदं नमामि।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(वंशस्थ छन्द)

सुगांगेय कुंभस्थ गंगा जलौघैः, कजामोद युक्तैर्-गलद्घर्ममुक्तैः।
जगद्देव देवं कृतेन्द्रादि सेवं, यजेऽहं जिनेंद्रं सुनाभेय पुत्रं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुगंधश्रितैः शुभः संदर्शितांकैः, लसच्-चंदनैश्-चारु चंद्रादि मिश्रैः।
जगद्देव देवं कृतेन्द्रादि सेवं, यजेऽहं जिनेंद्रं सुनाभेय पुत्रं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

सुशालीय तंदूल पुंजैः पवित्रैः, स्वतेजो जितेंदु प्रभाहार तारैः।
जगद्देव देवं कृतेन्द्रादि सेवं, यजेऽहं जिनेंद्रं सुनाभेय पुत्रं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बसंताब्ज कुंदादि कैः सुप्रसूनैर्, भ्रमद्भृंग पुंजाहितश्-लक्ष्णरावैः।
जगद्देव देवं कृतेन्द्रादि सेवं, यजेऽहं जिनेंद्रं सुनाभेय पुत्रं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पयः सर्पिरिक्षु द्रवैः पायसान्नैः, सुगांगेय पात्रार्पितैः सन्निवेद्यैः।
जगद्देव देवं कृतेन्द्रादि सेवं, यजेऽहं जिनेंद्रं सुनाभेय पुत्रं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जितामर्त्यरत्नैः शुभैधर्मरत्नैः, कृतध्वन्तजात प्रमाणश्-प्रयत्नैः।
जगद्देव देवं कृतेन्द्रादि सेवं, यजेऽहं जिनेंद्रं सुनाभेय पुत्रं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुकालागुरुद्भूत-धूपै-रदभ्रैर्, जनानां सुधूमाभि कर्माति भ्रंशैः।
जगद्देव देवं कृतेन्द्रादि सेवं, यजेऽहं जिनेंद्रं सुनाभेय पुत्रं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

रसालोल्लसत्पूग सद्-बीज पूरैः, फलौघः सुभक्त व्रजा-मीष्टपूरैः।
जगद्देव देवं कृतेन्द्रादि सेवं, यजेऽहं जिनेंद्रं सुनाभेय पुत्रं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

कुशाद्यैः कुशोल्लासि सिद्धार्थ दूर्वैः, कनत्कांचन स्थाल-सुस्थैः सदर्घैः।
जगद्देव देवं कृतेन्द्रादि सेवं, यजेऽहं जिनेंद्रं सुनाभेय पुत्रं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अनुष्टुप-छन्द)

गर्भ जन्म तपः ज्ञानं, मोक्ष कल्याण पंचकं।
आदिनाथं परिप्राप्यं, विशदं जिन संपूजयेत्।।10।।

शान्तये शांतिधारा ।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

(बसंततिलका-छन्द)

गर्भावतार समये सुर पुष्प वृष्टिः,
कौमारिका विविध षट्पण सेव्यमानं।
मातुः प्रसूति जिन निर्गत मुक्ति शक्तिं,
त्रैलोक्यनाथ ! जिनराज पदं नमामि।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़वदि द्वितीयायां गर्भकल्याण प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्माभिषेक वर मंगल पूजनार्थं।
शक्रानि पाण्डुक शिलागत हर्ष पूर्वं।।
क्षीरोदकं कलश अष्ट सहस्र पूज्यं।
त्रैलोक्यनाथ ! जिनराज पदं नमामि।।2।।

ॐ ह्रीं चैत्रवदि नवम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीक्षोत्सवे सकल इन्द्र नरेन्द्र वृंदैः।
वैराग्य मोदन कृतं लौकान्तिकानाम्।।
श्री कल्पवृक्ष समदान जिनेन्द्र भद्रं।
त्रैलोक्यनाथ ! जिनराज पदं नमामि।।3।।

ॐ ह्रीं चैत्रवदि नवम्यां तपकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कैवल्य ज्ञान समये जिनदेव पूजां।
तेषां लभन्ति फल वांछति भाव पूर्वं।।
ॐकार वाणि मुख निर्गत शास्त्र रूपं।
त्रैलोक्यनाथ ! जिनराज पदं नमामि।।4।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनवदि एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यानाग्निकार वसु कर्म विनाश युक्तं।
कंदर्प दर्प मद निर्गत धीर नादं।।
शास्वत गुणेन् विशदाष्ट विलाश युक्तं।
त्रैलोक्यनाथ ! जिनराज पदं नमामि।।5।।

ॐ ह्रीं माघवदि चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अनुष्टुप-छन्द)

गर्भ जन्म तपः ज्ञानं, मोक्ष कल्याण पंचकं।
आदिनाथं परिप्राप्यं, अर्हत् जिन संपूजयेत्।।6।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

जयमाला

भुवनाम्भोजं ''विशदं'' धर्मामृत पयोधरम्।
योगि कल्पतरुं नौमिं देवदेवं वृष ध्वजम्।।

(मालिनी-छन्द)

जयति जगति मोह ध्वान्त विध्वंश दीपः।
स्फुरत् कनक मूर्ति ध्यान लीनो जिनेन्द्रः।।1।।

यदुपरि परिकीर्णः स्कन्ध देशा जटाली।
विगलित सरलान्तः कज्जलाभा विभाती।।2।।
जयति शिव पुरस्त्री स्मेर नेत्रावपात-
स्तवकित वपु रुच्चै नाभिसूनु-जिनेन्द्रः।।
सरस विकसिताभ्यो जात पूजोपचारः।
कृत सरसि जमाला मन्तरेणापि यस्य।।3।।
समवशरण लक्ष्म्या वीक्ष्यमाणः कटाक्षैः।
सुकृत विकृत चिन्है-रष्टभि प्रातिहार्यैः।।
अविहित विहितारि प्राज्य वैराग्य भावः।
स्व-पर गुरु नमामि प्रार्थ्य सम्यक् प्रसिद्धः।।4।।

(अनुष्टुप-छन्द)

श्रीमंतं मुक्ति भर्तारं, वृषभं वृषनायकं।
धर्म तीर्थंकरं ज्येष्ठं, वन्देऽनन्त गुणार्णवम्।।5।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्रायः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(उपजाति-छन्द)

सीतै सुगन्धै पयसां मनोज्ञ, धाराभिराराध्य महींद्र वंद्यं।
सिद्धार्थ राजात्मज-मिंद्रवंद्यं, श्री आदिनाथं जिनमर्चयामि।।

।। इत्यादि आशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

प्रथम वलयः

(अनुष्टुप-छन्द)

नमः श्री नाभिनन्दाय, मोक्षलक्ष्मी निवासने।
पादौ पुष्पांजलिं कुर्यात्, भुक्ति मुक्ति प्रदायिनीं।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

चतुः आराधना (मालनी-छन्द)

अतुल सुखनिधानं सर्वकल्याण बीजं,
जनन-जलधि-पोतं भव्य सत्त्वैक पात्रम्।
दुरित-तरु कुठारं पुण्य तीर्थं प्रधानं,
पिवतु जित विपक्षं दर्शनांगं सुधम्बुः।।1।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन आराधना अलंकृत श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुरित तिमिर हंसं मोक्ष लक्ष्मी सरोजं,
मदन-भुजग-मंत्रं चित्त मातंग सिंहम्।।
व्यसन-घन समीरं विश्व तत्त्वैक दीपं,
विषय सफर जालं ज्ञान-माराध्य त्वम्।।2।।

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञान आराधना अलंकृत श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरकगृह कपाटं नाक मोक्षेक मित्रं,
जिन गणधर सेव्यं सर्व कल्याण बीजं।

स्वपर हित-मदोषं जीव हिंसादि त्यक्तं,
परम चरित धर्मं सर्व संगं विमुक्तं।।3।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्र आराधना अलंकृत श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्मरमपि हृदि येषां ध्यान वह्नि प्रदीप्ते।
सकल भुवन मल्लं दह्यमानं विलोक्य।।
कृतभिय इव-मष्टास् ते कषाय न तस्मिन्।
पुनरपि हि समीयु सुतपसो जयन्ति।।4।।

ॐ ह्रीं सम्यक्तप आराधना अलंकृत श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(उपजाति छन्द)

पूर्णार्घ्यं - दत्तार्घ्य मव्यात्म हितै-रनर्घ्यं।
मुक्ति श्रियो मौक्तिकहार भूतम्।।
आराधनं नौमि परं पवित्रं।
तत्त्वैक पात्रं दुरितच्छि दस्त्रम्।।5।।

ॐ ह्रीं चतुः आराधना अलंकृत श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलयः

ह भ म र घ क स खा, पिण्ड वर्णादि संयुताः।
अत्रावतरत तिष्ठत्, भवत् संनिहितास् तथा।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

अथाष्ट बीजाक्षर पूजा

स्व-वर्गोपगतं चाये, हं पिण्डाक्षर संयुतं।
साग्नि सबिन्दु सकलं, षष्ठस्वर समन्वितं।।1।।

ॐ ह्रीं हं बीजाक्षर संयुत श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्व-वर्गोपगतं चाये, भं पिण्डाक्षर संयुतं।
साग्नि सबिन्दु सकलं, षष्ठस्वर समन्वितं।।2।।

ॐ ह्रीं भं बीजाक्षर संयुत श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्व-वर्गोपगतं चाये, मं पिण्डाक्षर संयुतं।
साग्नि सबिन्दु सकलं, षष्ठस्वर समन्वितं।।3।।

ॐ ह्रीं मं बीजाक्षर संयुत श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्व-वर्गोपगतं चाये, रं पिण्डाक्षर संयुतं।
साग्नि सबिन्दु सकलं, षष्ठस्वर समन्वितं।।4।।

ॐ ह्रीं रं बीजाक्षर संयुत श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्व-वर्गोपगतं चाये, घं पिण्डाक्षर संयुतं।
साग्नि सबिन्दु सकलं, षष्ठस्वर समन्वितं।।5।।

ॐ ह्रीं घं बीजाक्षर संयुत श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्व-वर्गोपगतं चाये, झं पिण्डाक्षर संयुतं।
साग्नि सबिन्दु सकलं, षष्ठस्वर समन्वितं।।6।।

ॐ ह्रीं झं बीजाक्षर संयुत श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्व-वर्गोपगतं चाये, सं पिण्डाक्षर संयुतं।
साग्नि सबिन्दु सकलं, षष्ठस्वर समन्वितं।।7।।

ॐ ह्रीं सं बीजाक्षर संयुत श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्व-वर्गोपगतं चाये, खं पिण्डाक्षर संयुतं।
साग्नि सबिन्दु सकलं, षष्ठस्वर समन्वितं।।8।।

ॐ ह्रीं खं बीजाक्षर संयुत श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ह भ म र घ झ स खा, पिण्ड वर्णादि संयुताः।
जलाद्यै पूजिताः संतु, श्रियै वृद्ध्यै समृद्धये।।9।।

ॐ ह्रीं अष्ट बीजाक्षर संयुत श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः
पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतिय वलयः

द्वादश भावना युक्तो, वैराग्य भाव युतेन् सा।
सम्यक्-प्रकारेण भव्या, यान्ति ते विशदं शिवं।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

सम्यक्त्व वर्धिनी चतुः भावना

(अनुष्टुप-छन्द)

कायेन मनसा वाचा, सर्वेष्वपि च देहिसु।
अदुःख जननी वृत्ती 'मैत्री' भाव विदां मता।।1।।

ॐ ह्रीं मैत्रीभावना संयुत श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

तपो गुणाधिके पुंसि, प्रश्रयाश्रय निर्भरः।
जायमानो मनोरागः, 'प्रमादो' विदुषां मतः।।2।।

ॐ ह्रीं प्रमोदभावना संयुत श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

गुण गणस्य स्तुवेऽहं, पूज्यः कारुण्य भावना।
चित्त वितृप्ति-रितयः, पूज्ये भक्ति-रवादि नः।।3।।

ॐ ह्रीं कारुणभावना संयुत श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मायते जने शत्रौ, राग-द्वेष मदान्वितो।
मान क्रोधादिकं त्यक्त्वा, 'माध्यस्थं' यज-मुक्तये।।4।।

ॐ ह्रीं माध्यस्थभावना संयुत श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैराग्य वर्धिनी द्वादश भावनां

संयोगो देहिनां वृक्षे, शर्वर्या-मिव पक्षिणाम्।
आज्ञैश्वर्यादयो भावाः, परिवेषा इव स्थिराः।।5।।

ॐ ह्रीं अनित्य भावना युक्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मृग-मीनौ परौ जन्त्वौः, सिंह-मीन-गृहीतयौः।
जायते रक्षकः काऽपि, कर्मग्रस्तस्य नो पुनः।।6।।

ॐ ह्रीं अशरण भावना युक्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करोति पातकं जन्तुर्-देह बांधव हेतवे।
श्वभ्रादिषु पुनर्-दुःख-मेकाकी सहते चिरम्।।7।।

ॐ ह्रीं संसार भावना युक्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनादि निधनो ज्ञानी, कर्त्ता भोक्ता च कर्मणाम्।
सर्वेषां देहिनां ज्ञेयो, मतो देहस्-ततोऽन्यथा।।8।।

ॐ ह्रीं एकत्व भावना युक्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बंभमीति चिरं जीवो, मोहांध तमसावृतः।
संसारे दुःखित-स्वान्तो, विचक्षु-रिव कानने।।9।।

ॐ ह्रीं अन्यत्व भावना युक्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वे सर्वैः समः प्राप्ताः, संबंधा जंतुनां गिभिः।
भवति भ्रमतः कस्य, तत्र तत्रास्य बांधवा।।10।।

ॐ ह्रीं अशुचि भावना युक्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निसर्ग मलिनः कायो, धाव्यमानो जलादिभिः।
अंगार इव नायाति, स्फुटं शुद्धिं कदाचन।।11।।

ॐ ह्रीं आस्रव भावना युक्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आस्रवं कुरुते योगो, विशुद्धिः पुण्य कर्मणाम्।
विपरीतः परं सद्यः, सेवितः पाप कर्मणाम्।।12।।

ॐ ह्रीं संवर भावना युक्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्यात्व-मास्रव द्वारं, विधत्ते तत्त्व रोचनम्।
संयमासंयम सद्यो, गृहीत्वार मिवार रे।।13।।

ॐ ह्रीं निर्जरा भावना युक्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

न कर्म निर्जरा जन्तोर्-जायते तपसा बिना।
संचितं धीयते धान्य-मुपयोगं बिना कुतः।।14।।

ॐ ह्रीं लोक भावना युक्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्षावसान कल्याण, भाजनेन शरीरिणां।
आर्हतो भावना धर्मो, भावतः प्रतिपद्यते।।15।।

ॐ ह्रीं बोधि दुर्लभ भावना युक्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नष्टा प्रमादतो बोधिः, संसारे दुर्लभा भवेत्।
नष्टं तमसि सद्-रत्नं, पयोधौ लभ्यते कथम्।।16।।

ॐ ह्रीं धर्म भावना युक्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशापीत्-यनुप्रेक्षा, धर्मध्याना-वलंबनम्।
नालंबनं बिना चित्तं, स्थिरतां प्रतिपद्यते।।17।।

ॐ ह्रीं सम्यक्त्व एवं द्वादश अनुप्रेक्षा युक्त श्री आदिनाथ
जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

श्रीमन्तं मुक्ति-भर्तारं, वृषभं वृष नायकम्।
धर्म तीर्थंकर ज्येष्ठं, वंदेऽनन्त गुणार्णवम्।।1।।

(तोटक छन्द)

वृषभादि जिनंत-मनंत बलं, शुभ लब्धि सु केवल मुक्ति फलं।
सु दयामय-धर्म विकासमतं, प्रणमामि सुनाभिनरेन्द्र सुतं।।2।।
वरकाम तनुं गत-दोषमलं, सकलाधिपति-हत-पाप खलं।
मुनिराज मनोम्बुज-सौख्य-कृतं, प्रणमामि सुनाभिनरेन्द्र सुतं।।3।।
कलिकाल सुहर्ष विनोद भरं, भरतादिक-भूमिप-मान-हरं।
जिन-मुन्नतरूप-कला-विशदं, प्रणमामि सुनाभिनरेन्द्र सुतं।।4।।
शत विघ्न निवारण कल्पतरुं, वचनामृत-तर्पित-भक्ति-परं।
शुभ नेत्र विनिर्जित पद्म छदं, प्रणमामि सुनाभिनरेन्द्र सुतं।।5।।
षट्कर्म विवोधित भवि कंजं, जिन धर्म प्रवर्तक कल्पद्रुमं।
जिन पाद पयोज सरोज समं, प्रणमामि प्रवर्तक कल्पद्रुमं।।6।।

(मालती छन्द)

निहित सकल घाती निश्चला ग्राऽवबोधे,
गदित परमधर्मो आदिनामा जिनेन्द्रः।
त्रितय तनु विनाशां निर्मलः शर्मसारो,
'विशद' सुख-मनन्तं शान्त सर्वात्मको नः।।7।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(बसंततिलका छन्द)

सम्यक्त्वदां प्रतिकृतिं तव ये पृथिव्यां।
निर्मापयंति जिनपुंगव ! भक्तिभाजः।।
धन्यास्त एव भुवनत्रय क्षोभकारि।
बध्नंति तीर्थकर पुण्यमहो ! किमन्यैः।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

श्री आदिनाथाष्टक

(मालनी छन्द)

जयति शिवपुर स्त्री स्मेर नेत्रावपात-
स्तवकित व पुरूच्चै नाभि सुनूर्जिनेन्द्रः।
सरस-विकसिताम्भो जात पूजोपचारः,
कृत सरसिजमालामन्तरेणापि यस्य।।1।।
जयति जगति वीरः शुद्ध भावास्तमारः,
त्रिभुवन-जन-पूज्यः पूर्णबोधैक राज्यः।
नत-दिविज-समाजः प्रास्त-जन्मदुबीजः,
समवसृति निवासः केवल श्री निवासः।।2।।

त्वपि सति परमात्मन्मादृशान्मोहमुग्धान्,
कथमतनु वशत्वान्बुद्ध केशान्यजेऽहम्।
सुगत-मगधरं वा वागधीशं शिवं वा,
जितभवमभिवन्दे भासुरं श्री जिनं वा।।3।।
यदमल पदपद्मं श्री जिनेशस्य नित्यं,
शतमख शत सेव्यं पद्म गर्भादि वन्द्यम्।
दुरित वन कुठारं ध्वस्त मोहांधकार,
सदखिल सुख हेतुं त्रिप्रकारै-र्नमामि।।4।।
जनन-वन-हुताशं छिन्न समोह पाशं,
शमित-मदन-मानं विश्व-विद्या, निदानम्।
चरूभिरुरु गुणौधं प्रीणितं प्राणि संघं,
जिनऋषभमहान्तं नौमि कर्मौघ शान्त्यैः।।5।।
जयति जन सुवन्द्यश्चित्चमत्कार युक्तः,
रामसुख भरकन्दोऽपास्त कर्मारि वृन्दः।
निखिल मुनि गरिष्ठः कीर्ति सत्तावरिष्ठः,
सकल-सुरप-पूज्यः श्री जिनो आदिनाथः।।6।।
स्तिमित तमसमाधि ध्वस्त निःशेष दोषं,
क्रम गत करणान्तर्द्वान हीनावबोधम्।
विमलममलमूर्ति कीर्ति भाजं द्युभाजां,
नमत जिनमवाप्त्यै-र्भक्ति भारेण भत्याः।।7।।

निहित सकलघाती निश्चलाग्रावबोधो,
गदित परमधर्मो आदिनामा जिनेन्द्रः।
'विशद' तनु विनाशान्निर्मलः शर्मसारो,
दिशतु सुखमनन्तं शान्त सर्वात्मको नः।।8।।
धर्मो दया कथमसौ सपरिग्रहस्य,
वृष्टि-र्धरातल हिता किमवग्रहेडिस्त।
तस्मात्त्वया द्वय परिग्रह मुक्तिरूक्ता,
तद् वासना सुमहितो जिन आदिनाथः।।19।।

श्री आदिनाथ चालीसा

दोहा - परमेष्ठी जिन पाँच हैं, मंगल उत्तम चार।
शरण चार की प्राप्ति कर, भवदधि पाऊँ पार।।
आज यहाँ हम भाव से, करते है गुणगान।
चालीसा जिन आदि का, गाते विशद महान।।

चौपाई

लोकालोक अनन्त बताया, जिसका अन्त कहीं न पाया।।1।।
लोक रहा है विस्मयकारी, चौदह राजू है मनहारी।।2।।
ऊर्ध्व लोक ऊर्ध्व में गाया, अधोलोक नीचे बतलाया।।3।।
मध्य लोक है मध्य में भाई, सागर दीप युक्त सुखदायी।।4।।
नगर अयोध्या जन्म लिया है, नाभिराय को धन्य किया है।।5।।
सर्वार्थ-सिद्धि से चय कर आये, मरुदेवी के लाल कहाए।।6।।

चिन्ह बैल का पद में पाया, लोगों ने जयकार लगाया।।7।।
आदिनाथ प्रभु जी कहलाए, प्राणी सादर शीश झुकाए।।8।।
जीवों को षट् कर्म सिखाए, सारे जग के कष्ट मिटाए।।9।।
पद युवराज का पाये भाई, विधि स्वयंवर की बतलाई।।10।।
सुत ने चक्रवर्ति पद पाया, कामदेव सा पुत्र कहाया।।11।।
हुई पुत्रियाँ उनके भाई, कालदोष की यह प्रभुताई।।12।।
ब्राह्मी को श्रुत लिपि सिखाई, ब्राह्मी लिपि अतः कहलाई।।13।।
लघु सुता सुन्दरी कहलाई, अंक ज्ञान की कला सिखाई।।14।।
लाख तिरासी पूरब जानो, काल भोग में बीता मानो।।15।।
इन्द्र के मन में चिंता जागी, प्रभु बने बैठे हैं रागी।।16।।
उसने युक्ति एक लगाई, देवी नृत्य हेतु बुलवाई।।17।।
उससे अतिशय नृत्य कराया, तभी मरण देवी ने पाया।।18।।
दृश्य प्रभु के मन में आया, प्रभु को तब वैराग्य समाया।।19।।
केश लुंच कर दीक्षा धारी, संयम धार हुए अविकारी।।20।।
छह महीने का ध्यान लगाया, चित् का चिंतन प्रभु ने पाया।।21।।
चर्या को प्रभु निकले भाई, विधि किसी ने जान न पाई।।22।।
छह महीने तक प्रभु भटकाए, निराहार प्रभु काल बिताए।।23।।
नृप श्रेयांश को सपना आया, आहार विधि का ज्ञान जगाया।।24।।
अक्षय तृतीया के दिन भाई, चर्या की विधि प्रभु ने पाई।।25।।
भूप ने यह सौभाग्य जगाया, इक्षु रस आहार कराया।।26।।

पंचाश्चर्य हुए तब भाई, ये है प्रभुवर की प्रभुताई।।27।।
प्रभुजी केवलज्ञान जगाए, समवशरण तब देव बनाए।।28।।
प्रातिहार्य अतिशय प्रगटाए, दिव्य ध्वनि तब प्रभु सुनाए।।29।।
बारह योजन का शुभ गाए, गणधर चौरासी प्रभु पाए।।30।।
माघ वदी चौदश कहलाए, अष्टापद से मोक्ष सिधाए।।31।।
मोक्ष मार्ग प्रभु ने दर्शाया, जैनधर्म का ज्ञान कराया।।32।।
योग निरोध प्रभुजी कीन्हें, कर्म नाश सारे कर दीन्हें।।33।।
शिव पदवी को प्रभु ने पाया, सिद्ध शिला स्थान बनाया।।34।।
बने पूर्णतः प्रभु अविकारी, सुख अनन्त पाये त्रिपुरारी।।35।।
हम भी यही भावना भाते, पद में सादर शीश झुकाते।।36।।
जगह-जगह प्रतिमाएँ सोहें, भवि जीवों के मन को मोहें।।37।।
क्षेत्र बने कई अतिशयकारी, सारे जग में मंगलकारी।।38।।
जिस पदवी को तुमने पाया, वह पाने का भाव बनाया।।39।।
तव पूजा का फल हम पाएँ, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ।।40।।

दोहा - चालीसा चालीस दिन, दिन में चालीस बार।
'विशद' भाव से जो पढ़ें, पावें भव से पार।।
रोग शोक पीड़ा मिटे, होवे बहु गुणवान्।
कर्म नाश कर अन्त में, होवे सिद्ध महान।।

जाप्य : ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः मम सर्व कार्य सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

श्री आदिनाथ जी की आरती

आज करें हम आदि प्रभु की, आरती मंगलकारी-2।
रोग-शोक-संताप निवारक-2, पावन मंगलकारी।।
हो बाबा, हम सब उतारें तेरी आरती।।टेक।।
भक्तों को हे प्रभू आपने, अतिशय कई दिखाए-2।
दीन-दुखी जो दर पे आए-2, उनके कष्ट मिटाए।।
हो बाबा, हम सब उतारें तेरी आरती।।1।।
दूर दूर से आशा लेकर, भक्त यहाँ पर आते-2।
भक्त आपकी आरती करके-2, मन वांछित फल पाते।।
हो बाबा, हम सब उतारें तेरी आरती।।2।।
कृपा आपकी पाने को हम, दर पे चल के आए-2।
अर्चा करने 'विशद' भाव से-2, दीप जलाकर लाए।।
हो बाबा, हम सब उतारें तेरी आरती।।3।।
हमने सुना है सद्भक्तों के, तुम हो कष्ट निवारी-2।
हम भी द्वार आपके आए-2, आज हमारी बारी।।
हो बाबा, हम सब उतारें तेरी आरती।।4।।
दीनानाथ अनाथों के हो, सब पर कृपा दिखाते-2।
अतः भक्त तव चरणों आके-2, सादर शीश झुकाते।।
हो बाबा, हम सब उतारें तेरी आरती।।5।।

आचार्य श्री विशद सागर जी महाराज पूजन

स्थापना

दोहा- विशद गुणों के कोष हैं, विशद सिन्धु है नाम।
विशद करें आह्वान हम, करके चरण प्रणाम।।

ॐ ह्रूं प.पू. आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(पूजा-अष्टक)

हम हैं मन वच तन के रोगी, गुरुवर स्वस्थ आत्म के भोगी।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! जलं निर्वपामीति स्वाहा।

राग द्वेष गुरु मोह नशाए, दुख संसार के हमने पाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

वैभाविक परिणति में आए, शुद्धातम को हम विसराए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

रहा काम का फूल विषैला, करते हम आतम को मैला।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन की नित चाह बढ़ाए, क्षुधा रोग से ना बच पाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आँख मीचते होय अंधेरा, जब जागे तव होय सबेरा।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूल धूप की हमे सताए, कर्म पूर्ण मेरे क्षय जाये।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल की आशा सदा बढ़ाई, लेकिन पूर्ण नहीं हो पाई।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! फलं निर्वपामीति स्वाहा।

विशद अर्घ्य हम यहाँ चढ़ाए, पद अनर्घ्य पाने हम आए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- नीर भराया कूप से, देते शांतीधार।
अष्टकर्म को नाश कर, मैट सकें संसार।।

।। शान्तये शान्तिधारा।।

दोहा- पुष्पांजलि को हम यहाँ, लाये सुरभित फूल।
मुक्ती पाने के लिए, साधन हों अनुकूल।।

।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

जयमाला

दोहा-लघुनन्दन तीर्थेश के, जिनवाणी के लाल।
विशद सिन्धु गुरुदेव की, गाते हैं जयमाल॥

(छन्द-तामरस)

जय जय जय गुरुदेव नमस्ते, पूजें चरण सदैव नमस्ते।
विराग सिन्धु के शिष्य नमस्ते, उज्जवल भाग्य भविष्य नमस्ते॥
अर्हत् सम स्वरूप नमस्ते, विशद सिन्धु जग भूप नमस्ते।
अतिशय महिमा वान नमस्ते, करते जग कल्याण नमस्ते॥
शब्दों में लालित्य नमस्ते, हितकारी साहित्य नमस्ते।
वाणी जगत हिताय नमस्ते, दर्शन दर्श प्रदाय नमस्ते॥

सोरठा-पत्थर में भगवान, दिखते भक्ती भाव से।
करते हम गुणगान, गुरुवर जो साक्षात् हैं॥

सारा जग यह जिनके चरणों, नत हो शीश झुकाता है।
भाव सहित जिनकी अर्चा कर, अतिशय महिमा गाता है॥
इतनी शक्ति कहाँ हम गुरु को, हृदय में शुभ आह्वान करें।
अल्प बुद्धि से उनके चरणों, का हम भी गुणगान करें॥
है श्मशान सरीखा हे गुरु!, मन मंदिर का देवालय।
आन पधारो हृदय हमारे, तो बन जाये सिद्धालय॥

दोहा- हम दोषों के कोष हैं, हुए विशद मदहोश।
दर्शन करके आपका, मन में जागा होश॥

विशद सिन्धु,हे विशद सिन्धु!, हम करते हैं चरणों वंदन।
भक्ति सुमन करते हैं अर्पित, भाव सहित करते अर्चन॥
जिनकी चर्चा अर्चा करके, खो जाए मन का क्रन्दन।
ऐसे गुरु के चरण कमल कों, करते हैं हम अभिनन्दन॥
करुणामूर्ती परम विरागी, यह जग करता अभिनन्दन।
शिव पद के राही तव चरणों, मेरा बारम्बार नमन॥

दोहा- ज्ञानामृत में भाव से, श्रद्धा का रस घोल।
तीनों योग सम्हाल के, गुरु की जय जय बोल॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय! जयमाला
पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- महिमा जिन की हैं अगम, पायें कैसे पार।
करें आरती भाव से, वंदन बारंबार॥

॥ इत्याशीर्वादः॥

(संघस्थ) -ब्र. आरती दीदी

आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज: - माई री माई मुंडरे पर तेरे बोल रहा कागा...)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारें, आरति मंगल गावें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....
ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की...2, महिमा कही न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।। टेक।।
सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।। टेक।।
जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला...2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।। टेक।।
धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।। टेक।।